Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

A Referred Peer Review Research Journal

Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026

Manuscript Information	Research Paper	Paper No. VBRP-34

जीव विविधता संरक्षण एवं सतत् शहरी विकास : भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. प्रमिला बघेल , *विभागाध्यक्ष (भूगोल), शासकीय माधव विज्ञान महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)*
श्रीमती करुणा नामदेव, *शोधार्थी (भूगोल), प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शासकीय माधव महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)*

सारांश : वर्तमान समय में तीव्र शहरीकरण के कारण प्राकृतिक संसाधनों एवं जैव विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। बढ़ते शहरीकरण, औद्योगीकरण तथा जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप वन क्षेत्र, जल स्त्रोत एवं प्राकृतिक आवास निरंतर नष्ट हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में सतत् शहरी विकास एवं जैव विविधता संरक्षण की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण को विशेष महत्व दिया गया है। वेदों, उपनिषदों तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों में प्रकृति के साथ संतुलित जीवन शैली अपनाने पर बल दिया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में जैव विविधता संरक्षण एवं सतत् शहरी विकास के संबंध का अध्ययन भारतीय ज्ञान प्रणाली के संदर्भ में किया गया है, तथा आधुनिक शहरी नियोजन में पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान के समावेशन की संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है।

परिचय : मानव जीवन एवं पर्यावरण का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। जैव विविधता पृथ्वी पर संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान पारिस्थितिक तंत्रों पर दबाव बढ़ रहा है संयुक्त राष्ट्र के अनुसार वर्ष 2050 तक विश्व की लगभग 68 प्रतिशत जनसंख्या शहरी क्षेत्रों में निवास करेगी। ऐसे में शहरी विकास एवं जैव विविधता संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करना आवश्यक है।

भारतीय संस्कृति में पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश को पंचमहाभूत माना गया है तथा इनके संरक्षण को मानव कर्तव्य बताया गया है। इसलिए भारतीय ज्ञान परंपरा सतत् विकास की अवधारणा को मजबूत आधार प्रदान करती है। वेदों उपनिषदों तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों में प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने का संदेश दिया गया है। वर्तमान समय में आवश्यकता है कि आधुनिक शहरी विकास योजनाओं में भारतीय पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान को सम्मिलित किया जाए, जिससे जैव विविधता संरक्षण एवं सतत् विकास के लक्ष्यों को प्रभावी रूप से प्राप्त किया जा सके।

जैव विविधता से आशय पृथ्वी पर पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के पौधों, जीव-जंतुओं सूक्ष्म जीवों तथा उनके पारिस्थितिक तंत्रों की विविधता से है। यह मानव जीवन एवं पर्यावरणीय संतुलन के लिए अत्यंत आवश्यक है। जैव विविधता न केवल भोजन, औषधि और अन्य प्राकृतिक संसाधन प्रदान करती है, बल्कि जलवायु संतुलन, जल संरक्षण, मृदा उर्वरता, तथा प्रदूषण नियंत्रण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जैव विविधता किसी भी क्षेत्र की पारिस्थितिक स्थिरता का आधार होती है। यह प्राकृतिक आपदाओं, रोगों तथा जलवायु परिवर्तन जैसी परिस्थितियों का सामना करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जितनी

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

अधिक जैव-विविधता होगी, उतना ही अधिक पारिस्थितिक तंत्र मजबूत एवं संतुलित होगा।

सतत् शहरी विकास से तात्पर्य ऐसे शहरी विकास से है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की जरूरतों एवं संसाधनों से समझौता न करके, शहरों में पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समानता तथा भौतिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखने पर विशेष बल दिया जाता है। इसके अंतर्गत हरित क्षेत्र (Green Spaces) शहरी वन, जल निकायों का संरक्षण, स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन तथा पर्यावरण अनुकूल परिवहन प्रणाली को प्रोत्साहित किया जाता है। सतत् शहरी विकास का मुख्य उद्देश्य शहरों को पर्यावरण अनुकूल, संसाधन कुशल तथा रहने योग्य बनाना है। इसके अंतर्गत ऐसी नीतियों को अपनाने पर बल दिया जाता है, जो प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ-साथ आर्थिक प्रगति और सामाजिक कल्याण को भी सुनिश्चित करें।

इसके अतिरिक्त, वर्तमान समय में पर्यावरणीय असंतुलन, जलवायु परिवर्तन तथा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के कारण मानव जीवन के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। शहरी क्षेत्र के विस्तार के साथ-साथ प्राकृतिक आवासों का विनाश भी बढ़ रहा है, जिससे अनेक वनस्पति एवं जीव प्रजातियाँ विलुप्त होने की कगार पर पहुँच गई है। इसलिए विकास और पर्यावरण संरक्षण के मध्य संतुलन स्थापित करना समय की प्रमुख आवश्यकता बन गया है।

जैव विविधता की अवधारणा :
जैव विविधता में पृथ्वी पर पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के जीवों, पौधों तथा सूक्ष्म जीवों की विविधता को सम्मिलित किया जा सकता है। भारत विश्व के उन देशों में शामिल है, जहाँ जैव विविधता अत्यधिक समृद्ध पाई जाती है। हिमालय, पश्चिमी घाट, सुंदरवन तथा पूर्वोत्तर भारत जैसे क्षेत्र जैव विविधता के प्रमुख केन्द्र हैं। इन क्षेत्रों में अनेक दुर्लभ एवं स्थानिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनका संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। जीव विविधता तीन स्तरों पर पाई जाती है-

(1) आनुवंशिक विविधता : आनुवांशिक विविधता जीवों को बदलती हुई पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुकूल बनने में सहायता प्रदान करती है। यह कृषि, पशुपालन तथा खाद्य सुरक्षा के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

(2) प्रजातीय विविधता : किसी क्षेत्र में विभिन्न प्रजातियों की उपस्थिति उस क्षेत्र की पारिस्थितिक समृद्धि को दर्शाती है। प्रजातीय विविधता पारिस्थितिक तंत्र की उत्पादकता एवं स्थिरता को बनाए रखने में सहायक होती है।
(3) **पारिस्थितिक तंत्र विविधता :** विभिन्न प्रकार के पारिस्थितिक तंत्र अनेक जीवों को आश्रय प्रदान करते हैं तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इनका संरक्षण पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

सतत् शहरी विकास की अवधारणा :
सतत् शहरी विकास का अर्थ है ऐसा विकास जो आर्थिक, सामाजिक तथा पर्यावरणीय आवश्यकताओं के बीच संतुलन बनाए रखे।
इसके प्रमुख घटक हैं-

- नवीकरणीय ऊर्जा
- सार्वजनिक परिवहन
- जल संरक्षण
- ठोस अपशिष्ट प्रबंधन
- हरित भवन (Green Buildings)
- हरित क्षेत्र एवं शहरी वन

इन सभी घटकों का उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग सुनिश्चित करना तथा प्रदूषण एवं पर्यावरणीय क्षति को कम करना है। इनके प्रभावी क्रियान्वयन से शहरों को अधिक स्वच्छ, सुरक्षित और टिकाऊ बनाया जा सकता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली में पर्यावरण संरक्षण :

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

भारतीय ज्ञान परम्परा में प्रकृति और मानव को एक-दूसरे का पूरक माना गया है। यहाँ पर्यावरण संरक्षण केवल वैज्ञानिक आवश्यकता नहीं, बल्कि नैतिक एवं सांस्कृतिक दायित्व भी माना गया है। यही कारण है कि भारतीय समाज में प्रकृति के विभिन्न तत्वों के प्रति सम्मान की भावना विकसित हुई।

वेदों, उपनिषदों में पर्यावरण संरक्षण :

अथर्ववेद, यजुर्वेद तथा अन्य वैदिक ग्रंथों में भी प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं उनके संतुलित उपयोग पर बल दिया गया है। ये शिक्षाएँ आज के पर्यावरणीय संकट के समाधान में भी उपयोगी सिद्ध हो सकती है। ऋग्वेद में पृथ्वी को माता कहा गया है, ''माताभूमि: पुत्रोहं पृथिव्या!'' अर्थात् पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं।

''ईशावास्य उपनिषद'' प्रकृति के संसाधनों के सीमित एवं न्यायपूर्ण उपयोग का संदेश देता है।

निष्कर्ष :

वर्तमान समय में सतत् शहरी विकास और जैव विविधता संरक्षण दोनों ही मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक है। तेजी से बढ़ते शहरीकरण के कारण जैव विविधता पर गंभीर खतरे उत्पन्न हो रहे हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रकृति और मानव के मध्य संतुलित संबंध स्थापित करने की प्रेरणा देती है। यदि आधुनिक विज्ञान एवं तकनीक के साथ भारतीय पारंपरिक ज्ञान का समन्वय किया जाए तो सतत् विकास लक्ष्यों की प्राप्ति संभव है। इसलिए नीति निर्माताओं, नगर नियोजकों, तथा नागरिकों को मिलकर ऐसे प्रयास करने चाहिए जिनसे विकास और पर्यावरण संरक्षण दोनों साथ-साथ आगे बढ़ सकें। इसके साथ ही जन जागरूकता लाना, पर्यावरणीय शिक्षा तथा सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देना भी आवश्यक है। यदि समाज के सभी वर्ग पर्यावरण संरक्षण के प्रति उत्तरदायित्व का निर्वहन करें तो सतत् विकास विकास के लक्ष्यों को अधिक प्रभावी ढंग से प्राप्त किया जा सकता है।

संदर्भ सूची:

1. Gadgil M. & Guha R. (1995) : Ecology and Equity, Routledge.
2. Kautilya (2012) : Arthashastra, Penguin Books.
3. National Biodiversity Authority (2024) : Biodiversity conservation in India.
4. Ministry of Environment, forest and climate change (2024) : India state of forest report.
5. United Nations (2024) : Sustainable Development Goals Report.
6. राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण (2022): भारत में जैव विविधता संरक्षण, चैन्नई।
7. सिंह सविन्द्र (2020): पर्यावरण भूगोल, इलाहाबाद, प्रयाग पुस्तक भवन।
8. ईशावास्य उपनिषद, गीता प्रेस, गोरखपुर
9. भारत सरकार, नीति आयोग (2023): सतत् विकास लक्ष्य (SDGs) भारत रिपोर्ट